Different approaches of study of the Inter national politics

* उपागम की परिभाषा किसी विशेष परिदृश्य को देखने और उसके बाद उसका विश्लेषण करने के ढंग के रूप में की जा सकती है।
* ऐतिहासिक उपागम की विलक्षण विशेषता है, अतीत या समय की किसी चयनित अवधि और साथ ही किसी विशेष चरण के भीतर घटनाओं की श्रृंखला पर ध्यान केन्द्रित करना ताकि यह विश्लेषण किया जा सके कि घटनाएँ क्या हैं? उनमें क्या बनने की प्रकृति है? यह जानने में अधिक रुचि रहती है कि वे क्या कर रही हैं? और वे कैसी बनी?
* दार्शनिक उपागम के समर्थक राज्य को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में नैतिक सुधार के अभिकर्ता के रूप में देखते हैं।
* जर्मनी के आदर्शवादी हीगल तथा उसके नीत्शे, ट्रीट्स्के व बर्नहार्डी जैसे अनुयायियों ने राष्ट्रराज्य के विचार की विजय के लिये महायुद्ध के मामले को न्यायसंगत माना।
* हीगल तथा उसके अनुयायियों के मामले को अलग रखकर यह कहा जा सकता है कि दार्शनिक उपागम शांतिवाद की परम्परा का समर्थन करने के लिए प्रसिद्ध है।
* जब से ग्रोशियस ने अन्तर्राष्ट्रीय कानून पर अपना महान ग्रन्थ प्रस्तुत किया, अग्रणी लेखकों की एक बड़ी संख्या ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में वैधानिक उपागम का अनुकरण किया है। इसके अन्तर्गत जेरेमी बेन्थम, क्वीन्सी राइट, मार्टिन वाइट, चार्ल्स डि विश्शर, विलियम

Scanned By Scanner Go

ह्यूम, ग्रेनविल क्लार्क तथा लुई बी० सोन के नामों का उल्लेख किया जा सकता है।

8- इन लोगों ने राष्ट्र राज्यों के व्यवहार को विनियमित करने के लिये विश्व कानून की आवश्यकता पर बल दिया है।

8- स्पष्टतया, वैधानिक उपागम, जिसे रूप में इसे राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन पर लागू किया जाता है, इस आकलन पर आधारित है कि कानून ही किसी विशेष स्थिति में की जाने वाली कार्यवाही का निर्धारण और साथ ही किसी अन्य स्थिति में उसका निषेध करता है।

Pol. sc (Hons)
Part - II
paper. IV

Dr. Rama Kant Pandey
S. R. M. P. College
Baso Chakiya

Scanned By Scanner Go